ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-8* September- 2017
Innovation The Research Concept

चन्दौली जनपद का भौगोलिक एवं पुरातात्विक परिदृश्य

जितेन्द्र सिंह नौलखा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
प्राचीन इतिहास विभाग,
के0एन0पी0जी0 कॉलेज,
ज्ञानपुर, भदोही,
उ0 प्र0

सारांश

किसी भी क्षेत्र का भौगोलिक स्वरुप उस क्षेत्र के विकास हेतु दर्पण का कार्य करता है। क्षेत्र के सम्यक अध्ययन के लिए उस क्षेत्र के भैगोलिक स्वरुप का ज्ञान होना अति आवश्यक है। भौगोलिक स्वरुप से तात्पर्य प्राकृतिक व सांस्कृतिक अवयवों तद्जनित भूदृश्यों के अध्ययन से है। भौतिक तत्व से अभिप्राय किसी क्षेत्र की स्थिति एवं विस्तार, भूगर्भिक संरचना, उच्चावच अपवाह तन्त्र, मिट्टी तथा प्राकृतिक वनस्पति आदि तथ्यों से है,जबकि सांस्कृतिक तत्वों के अन्तर्गत यातायात भूमि उपयोग, फसल प्रतिरुप, अधिवास आदि का अध्ययन करने से है। प्रस्तुत शोधपत्र में चन्दौली जनपद के भौगोलिक स्वरुप की विभिन्न दृष्टिकोणों से विवेचना की गई है।

मुख्य शब्द : भौगोलिक स्थिति, नदी, जनपद, ऐतिहासिक, पुरातात्विक, अवशेष, प्राकृतिक उपादान, क्षेत्रफल।

प्रस्तावना

इतिहास के अध्ययन में भौगोलिक अवयवों का अत्यधिक महत्व है। किसी भी स्थान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में अथवा उसके अध्ययन में भूगोल एवं ऐतिहासिक तिथिक्रमों व घटनाओं को इतिहास के दो नेत्रों के रूप में देखा जाता है। ऐसा इसलिए माना जाता है क्योंकि किसी भी घटनाक्रम के घटित होने के क्रम में घटना की तिथि से कम महत्व स्थान को नहीं दिया जाता है। ऐतिहासिक घटनाओं का भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में निरीक्षण, परीक्षण एवं विश्लेषण अध्ययन को और अधिक रोचक और परिणाम केन्द्रित बनाता है।[1] भौगोलिक स्थिति एवं संरचना के अनुरूप ही मानवीय अन्धविश्वास, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक जीवन एवं अन्य मानवीय क्रिया–कलाप सम्पन्न होते हैं। भूगोल एवं इतिहास के पारस्परिक सम्बन्धों को स्थापित करना कदाचित सरल कार्य नहीं है, लेकिन यह भी एक अनिवार्य सत्य है कि दोनों के मध्य एक अटूट एवं अविच्छिन्न सम्बन्ध है। दोनों के सम्बन्ध को गाड़ी एवं नाव के उदाहरण से समझा जा सकता है। कभी इतिहास नया भूगोल खड़ा कर देता है तो कभी भूगोल नवीन इतिहास का सृजन करता है।

चन्दौली जनपद भगवान शिव की आदि नगरी काशी के उत्तरी–पूर्वी दिशा में चरणस्थली के रूप में अवस्थित है। अपनी स्थापना के पूर्व यह जनपद काशी राज्य तथा वाराणसी जनपद के अधीन सम्मिलित था, परन्तु प्रशासनिक प्रयोजन के निहितार्थ 20 मई 1997 ई0 में वाराणसी जनपद से अलग करके चन्दौली जनपद का गठन किया गया।[2] इस ग्रामीण जनपद को ऐतिहासिक पटल पर अपने गौरवशाली इतिहास, सांस्कृतिक जीवन, मानव सभ्यता के केन्द्रो को प्रदर्शित करने का स्वतंत्र अवसर संक्षिप्त रूप में मिला। वाराणसी के पूर्व–दक्षिण पूर्व 30 किमी0 की दूरी पर स्थित चन्दौली जनपद की अक्षांशीय स्थिति $24^0 56$ से $25^0 35''$ उत्तरी अक्षांश और $81^0 14''$ से $84^0 24''$ पूर्व देशान्तर के मध्य अवस्थित है।[3] इसकी औसत ऊँचाई समुद्रतल से लगभग 70 मी0 है तथा क्षेत्रफल 2484.70 किमी0 है। कर्मनाशा नदी उत्तर प्रदेश और बिहार राज्य की विभाजन रेखा है।[4]

पूर्व की दिशा में प्रवाहित होने वाली कर्मनाशा नदी और पश्चिम दिशा में स्थित पश्चिमी वाहिनी गंगा नदी इस जनपद की जलीय सीमा का निर्धारण करती है। गंगा नदी चन्दौली जनपद को वाराणसी एवं गाजीपुर से, कर्मनाशा नदी बिहार राज्य से और गड़ई नदी मिर्जापुर जनपद से पृथक करती है। भौगोलिक दृष्टिकोण से यह जनपद दक्षिण में विन्ध्य पर्वत श्रृंखलाओं से आच्छादित है एवं गंगा व कर्मनाशा नदियों के मध्य में एक विशाल एवं उपजाऊ मैदानी भू–भाग के रूप में विकसित है। चन्दौली जनपद के गठन के लिए तत्कालीन वाराणसी जनपद की चकिया, सकलडीहा तहसील और चन्दौली तहसील के परगना, राल्हूपुर के ग्राम डोमरी व सूजाबाद को छोड़कर तहसील–चन्दौली के समस्त क्षेत्रों को समाविष्ट किया गया। चन्दौली जनपद के पश्चिम

में वाराणसी जनपद, उत्तर में गाजीपुर जनपद, दक्षिण–पूर्व में मिर्जापुर जनपद, दक्षिण में सोनभद्र जनपद अवस्थित है। इस जनपद की पूर्वी सीमा बिहार राज्य से मिलती है। गंगा, कर्मनाशा, चन्द्रप्रभा और गड़ई नदियाँ जनपद की भौगोलिक और आर्थिक स्थिति का निर्धारण करती हैं। चन्दौली जनपद उ0प्र0 राज्य का पूर्वी द्वार के रूप में विख्यात है।[5]

चन्दौली जनपद मानव की प्राचीनतम् सभ्यता–संस्कृति एवं क्रियाकलापों का एक प्रमुख केन्द्र रहा है। इसी जनपद के सिरसी, मलहर, नौगढ़, बैराठ, प्रह्लादपुर, चकिया तहसील में चन्द्रप्रभा नदी घाटी में स्थित बैरा–दोमुहवाँ, कपिसहा, सोनवर्षा, पचफेड़िया, राजाबाबा की पहाड़ी, भैंसौड़ा, कुसुम्भार और कर्मनाशा नदी घाटी में स्थित लतीफशाह, कौड़िहार प्रागैतिहासिक सभ्यता के केन्द्र हैं। यहाँ के भौगोलिक, ऐतिहासिक, कलात्मक, पुरातात्विक एवं धार्मिक केन्द्र स्वतः ही जनपद की गौरवशाली इतिहास की झांकी प्रस्तुत करते हैं। जनपद में प्राचीन काल के मूल्यवान साक्ष्य पाये गये हैं। ईट, बिखरे टीले के अवशेष आज भी विद्यमान हैं। चन्दौली जनपद भौगोलिक मानचित्र में पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। बरसात के मौसम के दौरान चकिया, नौगढ़ के क्षेत्र पर जाऐं तो असली सुन्दरता, धान की फसलों और बादल को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि आसमान पृथ्वी को छूने की कोशिश कर रहा है। नौगढ़ के जंगलो में सुन्दर बाँध और झरने हमेशा दर्शकों को आकर्षित करते हैं। नौगढ, लतीफशाह, राजदरी–देवदरी झरने, चन्द्रप्रभा बाँध, नौगढ़ बाध, अवर्वाटाड़ झरना, देवकी नन्दन खत्री के प्रसिध्द उपन्यास 'चन्द्रकान्ता' का महल लोगों को सम्मोहित करता है। सम्पूर्ण पृथ्वी पर जितने प्रकार की धरातलीय संरचना हो सकती है, संभवतः वे सभी भी इस क्षेत्र में पायी जा सकती हैं। जहाँ एक तरफ ऊंचे–ऊंचे पर्वतीय और पठारी क्षेत्र हैं, वहीं दूर–दूर तक वन क्षेत्र स्थित हैं। नदियों एवं झरनों के बहाव और उनके कटाव के कारण यहाँ पथरीली, दोमट, बलुई मिट्‌टी पायी जाती है। प्राकृतिक जल प्रपात एवं नदियों के प्रवाहों के कारण तथा भूमि कटान के कारण यहां की भूमि कृषि कार्यो के लिए सर्वाधिक उपयोगी बन गयी है।

यह जनपद पुरातात्विक अध्ययन की दृष्टि से विन्ध्याचल–बघेलखण्ड क्षेत्र के अन्तर्गत माना जाता है और समुद्र तल से इसकी ऊंचाई लगभग 300 फीट (91. 44 मी0) है।[6] इस जनपद में सड़क शाखाएं उत्तर में सकलडीहा होते हुए सैदपुर घाट, हिंगुतरगढ़ तथा धानापुर को उत्तर–पश्चिम कैथी को, दक्षिण–पश्चिम में बबुरी तथा चकिया की तरफ, दक्षिण–पूर्व में मंझवार तथा धरौली को जाती है। जी0टी0 रोड के समानान्तर गया (बिहार) तक पूर्वी रेल पथ चला गया है। इसे 'गया रेल पथ' कहा जाता है। इस पर गंजख्वाजा, चन्दौली, मंझवार, सैयदरजा इत्यादि रेलवे स्टेशन स्थित हैं। चन्दौली सदर तहसील की सीमा से एक अन्य रेल पथ भी गुजरता हैं। इसे 'पटना रेलपथ' के नाम से जाना जाता है। इस रेल पथ पर चन्दौली जनपद के कुछमन, सकलडीहा ,तुलसी आश्रम, धीना इत्यादि रेलवे स्टेशन पड़ते हैं। रेलपथ का निर्माण सन् 1860 में कराया गया।[7] इसी जनपद में मुगलसराय रेलवे जंक्शन स्थित है।

चन्दौली जनपद में ही भारत प्रसिध्द मालवीय पुल स्थित है। इस पुल का निर्माण सन् 1880 ई0 में लार्ड डफरिन के नाम पर किया गया। इस रेलवे ब्रिज का निर्माण इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी, क्योंकि इसके निर्माण से आधुनिक औद्योगिक विकास की प्रक्रिया को तीव्र गति से प्रोत्साहन मिला। इस के साथ इस जनपद का देश के अन्य भागों से उत्तम यातायात सम्बन्ध भी स्थापित हो गया।[8] 1939 ई0 में इस रेलवे पुल के ऊपर एक सड़क मार्ग का निर्माण शुरू किया गया। जो अनेक बाधाओं के कारण अन्ततः सन् 1947 ई0 में पूर्ण हुआ। इस निर्माण–अवधि में एक दिन के लिए भी रेल–परिवहन नहीं रोका गया। 5 दिसम्बर सन् 1947 ई0 को तत्कालीन मुख्यमंत्री पं0 गोविन्द बल्लभ पन्त द्वारा इसे मालवीय पुल के नाम से उद्घाटित किया गया।[9]

पश्चिम वाहिनी गंगा भी इसी जनपद में पड़ती है। मालवीय ब्रिज से कैथी तक नदी का बहाव पूरब दिशा में है। महाभारत में गंगा–गोमती संगम स्थल को मारकण्डेय तीर्थ कहा गया है। यह वर्तमान कैथी के समीप ही अवस्थित है। कैथी से बलुआ तक धारा पुनः उत्तर की ओर जाती है। राल्हूपुर परगना में गंगा की एक उपधारा विकसित होती है, जो मानसून काल में कैथी का एक कोना काटकर चार गाँवों का एक टापू निर्मित करती है। यह उपधारा बलुआ से थोड़ा पहले की गंगा में मिल जाती है। बलुआ के बाद गंगा उत्तर–पष्चिम वाहिनी हो जाती है। राल्हूपुर और कटेसर की सीमा तक गंगा का बांया किनारा नीचा है। यहाँ से नदी पहले उत्तर की ओर और पुनः उत्तर–पूर्व की ओर प्रवाहित होती है। कटेसर के दक्षिण–पूर्व से ऊँचा कंकरीला किनारा शुरू हो जाता है। दूसरा किनारा चन्दौली जनपद के बरह परगना में है। बरह परगना के उत्तरी भाग से कुछ दूरी तक गंगा नदी गाजीपुर और वाराणसी जनपद की सीमा अंकित करती है। महाइच परगना में गंगा सर्वप्रथम जगदीशपुर न्याय पंचायत स्थित दियागाँव से प्रवेश करती है और नौधरा ग्राम तक पूर्व–दक्षिण दिशा में बहती है। इसके बाद गंगवार, नगवा मेढ़वा ग्राम तक गंगा की धारा उत्तर–पूर्व दिशा में बहने लगती है। वहाँ से पुनः नदी की धारा महाइच परगना के पूर्व स्थिति अन्तिम गाँव महुजी तक पूर्व–दक्षिण दिशा में प्रवाहित होती है।[10] सम्पूर्ण महाइच परगना के उत्तर और उत्तर–पूर्वी सीमा को गंगा नदी गाजीपुर जनपद से पृथक करती है।

चन्दौली जनपद उत्तर प्रदेश का पूर्वी द्वार है। पश्चिम में उत्तर–पश्चिम और उत्तर में पश्चिम–वाहिनी गंगा, दक्षिण में मनोहारी एवं विहंगम विन्ध्य पर्वतमालाओं से घिरा यह जनपद क्षेत्र को एक आकर्षण स्वरूप प्रदान करता है। संभवतः प्रकृति ने इस समस्त जनपद को प्राकृतिक सौन्दर्य एवं उपादानों से परिपूर्ण किया है। यदि इस जनपद के पहाड़ी क्षेत्रों की बात की जाए तो यहाँ पग–पग पर प्राकृतिक सौन्दर्य के अनायास ही दर्शन हो जाते हैं। इस जनपद के वन क्षेत्र में अनेक खनिज तत्व जैसे– चूना, पत्थर, मोरंग, लौह–अयस्क, एल्युमिनियम इत्यादि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। यद्यपि इस क्षेत्र में कोई

व्यापक उत्खनन–सम्बन्धी कार्य नहीं हुआ है, जिसके कारण खनिज पदार्थो का समुचित दोहन नहीं हो सका है। उत्खनन–सम्बन्धी कार्यो की अपूर्णता के लिए इस क्षेत्र में स्थित जंगलों में आंवला, नीम, पीपल, बर्हेह, हर्रे, जामुन जैसे औषधीय विशेषताओं वाले वृक्ष बहुतायत मात्रा में उपलब्ध हैं। इनके अतिरिक्त वनों में आम, इमली, बेर, बेल (शिवफल) अमरूद जैसे फलदार वृक्ष भी मिलते हैं।

चन्दौली जनपद में स्थित इन वन क्षेत्रों में ऐसे प्राकृतिक उपादान स्थित हैं जो अनेक कुटीर एवं लघु उद्योगों के लिए समुचित मात्रा में कच्चा माल उपलब्ध कराते हैं। ऐसे उपादानों में फर्नीचर–उद्योग के लिए बांस एवं बेंत, बीड़ी उद्योग के लिए तेंदुपत्ता, दुग्ध उद्योग के लिए चारा, अनेक औषधियां वृक्ष व फल उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त भवन–निर्माण उद्योग के लिए पत्थर एवं पटिया भी यहाँ पर्याप्त मात्रा में पायी जाती है। यदि उपरोक्त के अतिरिक्त जल संसाधनों और स्रोतो की बात की जाय तो ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति ने इस क्षेत्र को मुक्त हाथों से जलीय स्रोत प्रदान किए हैं। यह जनपद मुख्यतः कृषि उत्पादन पर आधारित है और इसका सबसे बड़ा कारण यहां के जलीय स्रोत ही है। यह जलीय स्रोत अधिकांश क्षेत्रों को सिचाईं सुविधाऐं प्रदान करते हैं, जिससे वर्षपर्यन्त फसलें उत्पन्न की जाती हैं। प्रकृति ने इस जनपद को विविध विशेषताओं एवं उर्वरता वाली मिट्टी प्रदान की है। इस जनपद में मुख्यतः 5 प्रकार की मिट्टी पाई जाती है, जिसमें करईल, बलुई, दोमट एवं सिकता मिट्टी प्रमुख हैं। इसी उर्वर भूमि के कारण यह जनपद धान का अत्यधिक उत्पादन करता है और इसीलिए इसे धान का कटोरा कहा जाता है। धान के अतिरिक्त गेहूँ, गन्ना, दलहनी–तिलहन फसलें, सब्जियाँ व फल भी यहाँ के प्रमुख कृषि उत्पाद हैं।[11] यदि प्राकृतिक उपादानों का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि पूर्वांचल के मैदानी क्षेत्र वाले जनपदों में चन्दौली जनपद के एक भू–भाग पर सर्वाधिक वन क्षेत्र हैं। जनपद के 30 प्रतिशत भाग पर विस्तृत रूप में फैला चकिया, शहाबगंज, नौगढ़ का वन क्षेत्र प्राकृतिक सम्पदाओं से परिपूर्ण है। हरे एवं विशाल वृक्षों एवं झाड़ियों की लम्बी श्रृंखलाएं और उनके बीच कलकल निनाद करते झरने एवं नदियाँ बरबस की ध्यानाकर्षित कर लेती हैं।[12]

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य ध्येय चन्दौली जनपद की पुरापाषाण काल से ऐतिहासिक काल तक की विरासत को प्रस्तुत करना है। भौगोलिक परिस्थितियाँ एवं प्राकृतिक संसाधन पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक घटनाक्रम में सहायक होते हैं। भौगोलिक रुप से चन्दौली जनपद दक्षिण में विन्ध्य पर्वत श्रृंखलाओं से आच्छादित है एवं गंगा–कर्मनाशा नदियों के बीच में एक विशाल एवं उपजाऊ मैदानी भू–भाग के रुप में विकसित है यह जनपद उत्तर प्रदेश राज्य के पूर्वी द्वार के रुप में विकसित है। इस जनपद को उ0 प्र0 का 'चावल का कटोरा' की संज्ञा भी दी गयी है। चन्दौली जनपद पूर्णरुपेण प्राकृतिक उपादानों यथा–पर्वत, नदी, पठार इत्यादि से स्वाभाविक रुप से आच्छादित है। ऐसी ही परिस्थितियाँ प्राचीनकाल में पुरापषाण युगीन मानव के रहने एवं क्रियाकलापो के लिए उपयुक्त थीं। अतः यह शोधपत्र चन्दौली जनपद में प्राकृतिक एवं भौगोलिक उपादानों और पुरातात्विक निधियों की उपलब्धता एवं ऐतिहासिक स्थलों के विवरण पर केन्द्रित है।

निष्कर्ष

चन्दौली जनपद में चन्द्रप्रभा नदी पर स्थित प्राकृतिक राजदरी एवं देवदरी जलप्रपात हो अथवा नौगढ़ (औरवाटाड़) बन्धे के समीप स्थित मनोहारी झरना हो अथवा चन्द्रप्रभा वन्य विहार हो, यह सभी प्रकृति की गोद में बैठकर सीधे उससे साक्षात्कार का अवसर प्रदान करते हैं। इस जनपद के वन क्षेत्रों में जहां प्राकृतिक सुषमा बिखरी पड़ी है, वहीं आज भी यहाँ के मूल निवासी भोले–भाले वनवासियों एवं उनके पारम्परिक जीवन शैली के सरलता से दर्शन किए जा सकते हैं। यह स्थिति इस सीमित क्षेत्रफल में वृहद भारत की स्पष्ट एवं मौलिक तस्वीर को प्रस्तुत करती हैं। इस जनपद के वन क्षेत्रों में दुर्लभ जड़ी–बूटियाँ और पहाड़ों पर लौह, शिलाजीत भी मिलता है। पहाड़ों के बीच प्राकृतिक गुफाओं में भित्ति–चित्र, वृक्षों की सघनता एवं हरियाली, पशु पंक्षियों का कलरव वन क्षेत्रों में गूँजता, बार–बार यहाँ आने के लिए आमत्रंण देता प्रतीत होता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *हिस्टोरिकल ज्योग्राफी, मिटचैल जे0बी0, पृष्ठ 12*
2. *जर्नल ऑफ यूपी हिस्टोरिकल सोसायटी, भाग–12, खण्ड–2, पृष्ठ 27*
3. *"प्राग्धारा" उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्व विभाग, अंक–10, 1999–2000, पृष्ठ 135*
4. *सामाजिक, आर्थिक समीक्षा, जनपद चन्दौली, 2007, अर्थ एवं संख्याधिकारी कार्यालय, चन्दौली, पृष्ठ 25*
5. *दैनिक जागरण, 28 दिसम्बर 1998, पृष्ठ 6*
6. *"प्राग्धारा", उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्व विभाग, अंक–10, 1999–2000, पृष्ठ 135–36*
7. *चन्दौली कल और आज, चन्दौली की भौगोलिक पृष्ठभूमि, डॉ0 जयराम सिंह, पृष्ठ 24*
8. *राज्य नियोजन संस्थान,उत्तर प्रदेश, 2007, पृष्ठ 69*
9. *"दैनिक आज", 6 दिसम्बर सन् 1947*
10. *मिनती सिंह : लोअर गंगा – घाघरा दोआब, वाराणसी, 1983 पृष्ठ 8*
11. *दैनिक जागरण – 19 अगस्त, 2006*
12. *चन्दौली का वन क्षेत्र – आनन्द सिंह, चन्दौली : कल और आज, पृष्ठ 102*
13. *चन्दौली का वन क्षेत्र – आनन्द सिंह, चन्दौली कल और आज, पृष्ठ 102–109*